स्वर्ग का द्वार है नारी

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

(पिछले अंक में हमने नारी के अनेक महिमामय गुणों को जाना, अब पढ़िए नारी की अन्य खूबियाँ ..सम्पादक)

कष्ट सहिष्णुता

नारी, मानव का निर्माण करती है। इस प्रक्रिया में उसे कई कष्टों का सामना करना पड़ता है पर हर कष्ट को चुनौती के रूप में स्वीकार कर वह अपने कार्य में लगी रहती है। गर्मी-सर्दी, अभाव, बीमारियाँ सब कुछ पार कर जाती है। संतान के सुख के लिए मुख का निवाला, रात की नींद, मौज-शौक और इच्छायें सब त्याग देती है। उसमें स्वाभाविक त्याग-वृत्ति है। यही त्यागवृत्ति ईश्वरीय कर्त्तव्य में भी काम आती है। आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा वह बेहद की जगतमाता भाव को धारण कर लेती है। विश्वभर की आत्माओं की आध्यात्मिक, नैतिक पालना के लिए वह बड़ी-बड़ी बाधाओं से भी टकरा जाती है। विपरीत परिस्थितियों में भी मूल्यों की पतवार संभाले रहती है।

कमीशन और उपहार का आकर्षण

नारी, घर को बड़ी बचत भावना से चलाती है। पैसे को संभाल-संभाल कर, बचा-बचाकर प्रयोग करती है। धन की बचत के लिए, रियायती दर पर चीज़ें मिलती हों तो लेने का मौका नहीं चूकती। सस्ती स्कीम, सेल, कमीशन या उपहार आदि की योजनाओं का उसे विशेष ध्यान रहता है। वर्तमान समय स्वयं परमात्मा पिता ने ईश्वरीय-ज्ञान की नि:शुल्क योजना चलाई है। ऋषि-मुनियों को कठोर तप करने के बाद जो सत्य ईश्वरीय ज्ञान उपलब्ध नहीं हुआ, वह इस योजना के तहत घर बैठे, बिना किसी तप और कष्ट के सहज मिल रहा है। नि:शुल्क ज्ञान की तरफ अपनी स्वाभाविक मनोवृत्ति के कारण महिलायें आकर्षित होकर, भागवत् प्रसिद्ध गोपिकाओं की तरह ईश्वरीय प्यार, गुण, शक्तियों से मालामाल हो सकती हैं।

समा लेने का संस्कार

नारी में समा लेने का संस्कार होता है। यदि उसका पुत्र, भाई, पति कोई ग़लत कार्य कर ले तो दिल में समाकर, भगवान से प्रार्थना करती है कि वह उसे सद्बुद्धि दे। आध्यात्मिक नारी के लिए फिर सारी दुनिया के लोग पुत्र या भाई तुल्य हो जाते हैं, वह उनकी भी ग़लती को फैलाने के बजाय, उस गलती से उन्हें छुड़ाने में भरसक मेहनत करती है। परमात्मा पिता की मधुर याद और अपनी शुभभावनाओं से सींच-सींच कर उनकी आत्मा को बलवान बना देती है जिससे वे उस बुरे संस्कार से छूटने का बल प्राप्त कर लेते हैं।

लक्ष्मी रूप

सतयुग में राजकुमारी राधा का, शादी के बाद महारानी लक्ष्मी नाम पड़ता है। उसी प्रथानुसार आज भी शादी होते ही नारी को लोग गृहलक्ष्मी के रूप में सम्मान देते हैं पर सही अर्थों में उसका लक्ष्मी रूप आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा ही निखरता है। जहाँ भौतिकता हमारे दायरे को गिने-चुने रिश्तेदारों और सहेलियों तक समेट देती है वहीं आध्यात्मिकता हमारी पहुँच सारे विश्व तक बना देती है। जैसे लक्ष्मी के दरवाज़े पर कोई भी भक्त, किसी भी धर्म, जाति, कुल, भाषा, रंग, देश का कभी भी आ सकता है, उसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान से विभूषित नारी में यह गुण आ जाता है कि उसके द्वार पर कोई भी, कभी भी आये, वह ज्ञान-रत्नों से उसकी झोली अवश्य भरेगी। कहा जाता है कि देना, लेना होता है और लेना, देना होता है। देने वाला कभी खाली नहीं होता। लक्ष्मी के एक हाथ से पैसे बरस रहे हैं और दूसरे हाथ से आशीर्वाद बरस रहे हैं, फिर भी आज तक ना तो वे पैसे से गरीब बनीं और ना ही आशीर्वाद से। अत: सर्व प्राप्तियों का आधार है देना। आध्यात्मिक नारी